SHAH CLASSES®
CULTIVATING SUCCESS SINCE 1998

विषय : हिंदी | कुल अंक : ८०

कक्षा : १० वी

Prelim Answer Paper - 1

विभाग १ - गद्य : २० अंक

प्र.१ (अ) निम्नलिखीत पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

१) अनुच्छेद पढ़कर दी गई कृतियाँ पूर्ण कीजिए:- २

उत्तर :i)

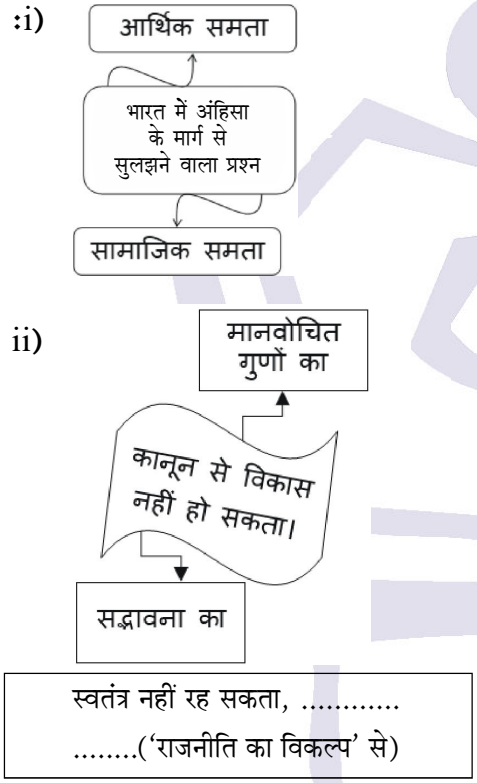

ii)

स्वतंत्र नहीं रह सकता, ...
.....('राजनीति का विकल्प' से)

२) वाक्य पूर्ण कीजिए । १

i) गांधीजी ने श्रम और श्रमिक की प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए माध्यम बनाया -

उत्तर : रचनात्मक कार्यां को ।

ii) किस के बल पर दूसरों से काम चला लेते हैं -

उत्तर : पैसे के बल पर।

३) निम्नलिखित वाक्य सत्य या असत्य हैं पहचानकर लिखिए । १

श्रमिक भी कर्तव्यपरायण रहा है ।

उत्तर : असत्य

४) निम्नलिखित शब्दों के वचन पहचानकर लिखिए। १

उत्तर :i) बच्चा - एकवचन

ii) **धनिक** - एकवचन

५) गद्यांश में से योजक शब्द ढूंढ कर लिखिए । १

उत्तर :i) कहीं - कही

ii) किसी -न-किसी

६) स्वमत :- २

शारीरिक श्रम स्वास्थ के लिए अति उत्तम 'विषय पर' अपने विचार लिखिए ।

उत्तर : शारीरिक श्रम का मतलब है वह मेहनत जिसमें हाथ - पैर के सहयोग से काम संपन्न हो । किसान, मजदूर, कुली, ठेलेवाले, शारीरिक मेहनत करते हैं। वैसे हर व्यक्ति जाने - अनजाने थोडी बहुत शारीरिक मेहनत करता ही है। अपने घर की सफाई करना, खाना बनाना, बरतन धोना और बाजार - हाट से समान - सब्जी लाना भी श्रम है । कुछ शारीरिक काम करने वाले लोग धूप में काम करते हैं। कुछ करखानों में पसीना बहाकर मेहनत करते हैं। कुछ अनाज के बोरे गाडियो पर चढाते - उतारते हैं । कुछ सडकों पर हथौडे लेकर पत्थर तोडते या खुदाई करते हैं। ये मोटा खाते और मोटा पहनते हैं, पर शारीरिक रूप से स्वस्थ होते है । दूसरी ओर वे लोग हैं, जो कोई शारीरिक श्रम नहीं करते। वे पौष्टिक भोजन करते हैं, नर्म गद्देदार बिछानों पर सोते हैं, पर बीमारी के कारण उन्हें नींद नहीं आती। भोजन नहीं पचता । डॉक्टर इन्हें कम खाने और ज्यादा दवाइयाँ लेने के लिए कहते हैं। शारीरिक श्रम के अभाव में इनका जीवन कष्टप्रद बन जाता है। डॉक्टर इन्हें हाथ - पैर चलाने और व्यायाम करने की सलाह देते हैं। ऐसे लोगों को शारीरिक श्रम करने वालों से सबक लेना चाहिए, जो अपनी मेहनत के बल पर भले - चंगे बने रहते हैं। इस प्रकार शारीरिक श्रम अच्छे स्वास्थ की कुंजी है।

(आ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

1) **अनुच्छेद पढ़कर दी गई कृतियाँ पूर्ण कीजिए :-** १

उत्तर :

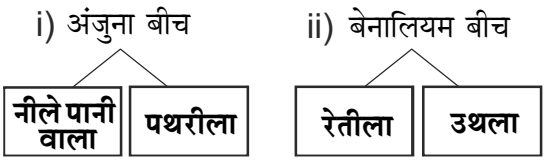

सबसे पहले हम अंजुना बीच.....
.....मछुआरों की पहली पसंद है।

2) एक- एक शब्द में उत्तर लिखिए । २

उत्तर: i) गोवा के छोटे-बड़े बीच की संख्या- **४०**

ii)काई ने यहाँ घर बना लिया था- **पत्थरों के बीच**

iii)अपने बच्चों को खतरों से सावधान कराने वाले- **परिवार के साथ आए पर्यटक**

iv)गोवा बेनालियम बीच इनकी पहली पसंद है- **मछुआरों की**

3) i)निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द गद्यांश से ढूंढकर लिखिए। १

उत्तर: 1) **बदसूरत** × खूबसूरत 2) **नापसंद** × पसंद

ii)निम्नलिखित शब्दों के लिए पर्यायवाची शब्द लिखिए : १

उत्तर: 1) **कमजोर** - दुर्बल 2) **आनंद** - खुशी

4) अपने द्वारा किए हुए पर्यटन का एक अनुभव २५ से ३० शब्दों में लिखिए:

उत्तर: पर्यटन का अपना अलग ही आनंद है। इसमें पर्यटकों को बहुत मजा आता है। मैंने भी इसका अनुभव लिया है। मैं बचपन में अपने परिवार के साथ गोवा गया था। वहाँ पर मैंने डॉल्फिन, मछलियाँ और बड़े-बड़े नावों का मजा लिया । मैं वहाँ सात दिन रूका था । मैंने बहुत मजे लिए, मैंने वहाँ अन्य भी बहुत चीजों का अनुभव लिया । वहाँ के बहुत सारे दृश्य देखने लायक थे।

5) स्वमत :- २

''सफल जीवन के लिए श्रम अनिवार्य है ।''

उत्तर : जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए श्रम अनिवार्य है। इसलिए कहा गया है - ''परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।'' उन्हीं लोगों का जीवन सफल होता है, वे ही लोग अमर हो पाते हैं जो जीवन को परिश्रम की आग में तपाकर उसे सोने की भाँति चमकदार बना लेते हैं। परिश्रमी व्यक्ति सदैव अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहता है। श्रम शारीरिक स्वास्थ के लिए भी आवश्यक है। बिना श्रम के शरीर अकर्मण्य हो जाता है एवं आलस्य घेर लेता है। परिश्रम करने के बाद शरीर थक जाता है, जिससें नींद अच्छी आती है। नींद में परिश्रम के दौरान हुई शारीरिक टूट -फूट की तेजी से मरम्मत होती है। श्रम का अर्थ लोग केवल शारीरिक श्रम समझते हैं, जबकि ऐसा नहीं है। शारीरिक श्रम के साथ-साथ मन-मस्तिष्क के प्रयोग को मानसिक श्रम की संज्ञा दी गई है। शारीरिक श्रम ही नहीं, बल्कि मानसिक श्रम से भी शरीर थक सकता है। कारखानों में काम करने वाले मजदूरों को जहाँ शारीरिक श्रम करने की आवश्यकता होती है, वहीं शिक्षक, वैज्ञानिक, डॉक्टर, शोधकर्ता इत्यादि को मानसिक श्रम से अपने उद्देश्यों की प्राप्ति करनी पडती है। यदि आदिमानव श्रम नहीं करता, तो आधुनिक मानव को इतनी सुख-शान्ति कहाँ से मिलती।

(इ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

1) उचित विकल्प चुनकर पूर्ण वाक्य फिर से लिखिए । २

१) **हिंदी हमारी .....है ।**
(राजभाषा/प्रांतीय भाषा/राष्ट्रभाषा)

उत्तर : हिंदी हमारी **राष्ट्रभाषा** है ।

२) **हिंदी हमारे विचारों के ..... का सरल माध्यम है ।**
(आदान-प्रदान/लेन-देन)

उत्तर : हिंदी हमारे विचारों के **आदान - प्रदान** का सरल माध्यम है ।

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है । यह.....
.....और राष्ट्र का विकास होगा ।

2) स्वमत : २

''राष्ट्रभाषा हिंदी'' पर ८ से १० वाक्यों में अपने विचार लिखिए ।

उत्तर : **'राष्ट्रभाषा हिंदी'**

हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा हिंदी है। यह लगभग भारत के प्रत्येक प्रांत में बोली एवं समझी जाती है। यह भाषा अत्यंत सरल भाषा है। गांधीजी ने इसकी उपयोगिता पर अधिक ध्यान दिया था। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा में एक विश्वविद्यालय है जो पूरी तरह हिंदी में ही है। राष्ट्रभाषा के प्रचार के लिए बहुत सी संस्थाएँ कार्य कर रही हैं। गांधीजी ने राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रयोग पर विशेष ध्यान दिया था। उनका मानना था कि हिंदी ही एक ऐसी भाषा है, जो पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँध सकती है। हमें अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी पर गर्व है।

विभाग २ - पदय : १२ अंक

प्र.२ अ) निम्मलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :- ६

1) अनुच्छेद पढ़कर दी गई कृतियाँ पूर्ण कीजिए :- २

उत्तर :१)

कृष्ण भक्ति से मीरा द्वारा की गई कृतियाँ

↓

कुल मर्यादा छोड़ना

↓

लोक-लाज छोड़ना

↓

साधु-संतो के बीच बैठना

↓

स्वामी का नाम जपना

२.

पद्यांश में जाए द्रव्यवाचक संज्ञा/खाद्य पदार्थ

दूध **माखन**

मेरे तो गिरधर गोपाल,.....
.....गिरधर तारो अब मोही ।।

2) वचन न बदलने वाले शब्द ढूँढ़कर लिखिए । २

उत्तर : १) मुकट २) माखन
३) फल ४) बेल

3) स्वमत :- २

पद्यांश के प्रथम चार पंक्तियों का सरल अर्थ २५ से ३० शब्दों में लिखिए ।

उत्तर : संत मीराबाई अपने आराध्य गिरिधर के उपासना में तल्लीन होकर कहती हैं कि जिनके माथे पर मोर मुकुट है, वे ही मेरे स्वामी हैं। उन्हें पाने का लिए मैंने कुल की मर्यादा छोडी तथा लोक - लाज खो दी।

(आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :- ६

1) i) अनुच्छेद पढ़कर दी गई कृतियाँ पूर्ण कीजिए : १

उत्तर :

पद्यांश मे आए दो जीव → दादुर
पद्यांश मे आए दो जीव → चक्रवाक

ii) एक-एक शब्द में उत्तर लिखिए । १

उत्तर : क) नए पत्ते आ गए हैं - पेडों पर ।

ख) पृथ्वी संपन्न हो गई है - अनाज से ।

दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाई । बेद.....
.....जिमि, पाइ कुसंग - सुसंग ।।

2) निम्न शब्दो के लिए पद्यांश में प्रयुक्त शब्द है । २

उत्तर : १) i) धरती - **महि** ii) बालक - **बटु**
२) i) पक्षी - **खग** ii) गुस्सा - **क्रोध**

3) पद्यांश के प्रथम चार पक्तियों का भावार्थ लिखिए :- २

उत्तर : कवि कहते हैं जब दादुर समुदाय की ध्वनि चारों दिशाओं में फैल जाती है, तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे विद्यार्थी के वेद पाठ कर रहे हों। कई वृक्षों पर नए पत्ते आने से वे हरे-भरे व सुंदर हो गए हैं जैसे किसी साधक या भक्त का मन ज्ञान प्राप्त होने पर हो जाता है । अर्क और जवास के पेड़ के पत्ते झड़ गए स्वराज्य का उद्यम गाता है। तब खोजने पर भी कुछ नहीं मिलता जैसे क्रोध धर्म को दूर कर देता है अर्थात् क्रोध का आवेश होने पर धर्म का ज्ञान नहीं रह जाता।

विभाग ३ पूरक पठन : ८ अंक

प्र.३ (अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :- ४

1) वाक्य को घटना क्रमानुसार लिखिए :- २

i) एकाएक पैर ठिठक गए ।

ii) गरीब से तो रुपये के लिए झिक-झिक करते हैं ।

iii) दिन तो अंगारे से तपे रहते ही थे ।

iv) मन में सुकून-सा महसूस होने लगा था ।

उत्तर : iii)दिन तो अंगारे से तपे रहते ही थे।
iv)मन में सुकून-सा महसूस होने लगा था।
i)एकाएक पैर ठिठक गए।
ii)गरीब से दो रुपये के लिए झिक-झिक करते हैं।

इस वर्ष बड़ी भीषण गरमी पड़.....
.....सुकून अनुभव कर सह था ।

2) स्वमतः- २

''प्रकृति वैभव का भंडार है ।''

उत्तर : प्रकृति की सुषमा सचमुच सुंदर है परंतु उसे समझने की शक्ति थोडे ही लोगों में होती है। प्रचंड ऊर्मिमय गंभीरघोषी महासागर का प्रथम दर्शन करने, निर्जन और घोर अरण्य में - जहाँ चिडियाँ पंख नहीं मारती - प्रथम ही प्रवास करने. पृथ्वी के ऊँचे पहाडों की चोटियों के स्फोट के कारण महाभयंकर ज्वालामुखी के डरावने मुख से पृथ्वी के पेट से वह निकले हुए पत्थर, मिट्टी, धातु इत्यादि पदार्थों के रस के प्रवाह

को प्रथम ही देखने अथवा नितांन शीत के कारण बर्फ से ढके हुए स्फटिकमय प्रदेश में चलने से जो नया और अपूर्व अनुभव प्राप्त होता है उसका कुछ अकथनीय संस्कार मन पर होता है। ये चमत्कारमयी प्राकृतिक घटनाएँ मानो प्रकृतिदेवी की लीलाएँ हैं। इनके देखनेवाले को ऐसा मालूम होता है कि मानो वह किसी नए जगत में खडा है और उसकी कल्पना और वर्णन - शक्ति स्तंभित हो गई है।

(आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :- ४

1) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ परिच्छेद से पहचानकर लिखिए। १

उत्तर : i) **तम** - अँधेरा ii) **पुष्प /सुमन** - फूल

2) लिंग पहचानकर लिखिए । १

उत्तर : i) **प्रकाश** - पुल्लिंग ii) **नैया** - स्त्रीलिंग

घना अंधेरा.....
.....देता प्रेरणा

3) स्वमत :- २

''कर्म ही पूजा है''

उत्तर : कर्म ही पूजा हैं ये शब्द हमारे यहाँ कहावत के तरह इस्तेमाल किये जाते हैं। कर्म ही पूजा हैं ये शब्द जितना छोटा हैं उतना ही इस शब्द का मतलब उतना बडा हैं। जैसे भगवन से आश्रीवाद लेने के लिए पूजा एकदम स्वच्छ मन से और लगन के साथ करते हैं, उसी प्रकार अपने काम में सफल होने के लिए हमे अपने काम को पुरे ईमानदारी के साथ और लगन के साथ ही करना होता हैं। लेकिन कर्म ही पूजा हैं शब्द हमे ये प्रेरणा देता हैं की हम जब उस काम में लगातार अपने बुलंद इरादो के साथ लग जाये, तो किसी भी तरह के रूकावट का सामना करना हमारे लिए आसान होगा ।

विभाग ४ - भाषा अध्ययन (व्याकरण) : १४ अंक

प्र.४ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

१) अधोरेखांकित शब्द का भेद लिखिए :- १

बाबू समस्वरुप आपने मेरे साथ दगा किया है ।

उत्तर : बाबू रामस्वरुप - व्यक्तिवाचक संज्ञा

साथ - संबंधसूचक अव्यय

किया है। - क्रिया

२) निम्नलिखित अव्यय शब्दों में से किसी एक का अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए :- १

i) बिल्कुल -

उत्तर : आपकी बातें बिल्कुल सही हैं।

ii) भाँति - .....

उत्तर : बेटा बिल्कुल अपने पिताजी की भाँति दिखता है ।

३) तालिका पूर्ण कीजिए (कोई एक):- १

उत्तर :

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
i) यथार्थ	यथा + अर्थ	स्वर संधि
ii) स्वाभिमान	स्व + अभिमान	स्वर संधि

४) सहायक क्रियाएँ पहचानकर लिखिए (कोई एक) १

i) मैंने कंप्यूटर को खरीद लिया है ।

उत्तर : लिया है - लेना, होना

ii) **उसने सुंदर आकृति देख ली ।**

उत्तर : (लेना) - ली

५) 'प्रथम' तथा 'द्वितीया' प्रेरणार्थक क्रियारूप लिखिए (कोई एक) १

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणासार्थक क्रिया	द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया
i) टहलना	टहलाना	टहलवाना
ii) चलना	चलाना	चलवाना

६) अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए :- १

गलती पकड़े जाने पर कमल लज्जित हो गया ।

(झेंप, जाना, थर-थर काँपना, चैन न मिलना, अपेक्षा करना)

उत्तर : गलती पकडे जाने पर कमल झेंप गया ।

अथवा

निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक मुहावरो का अर्थ लिखकर अपने वाक्य में प्रयोग कीजीए।

i) चाँदनी में नहाना -

उत्तर : चाँदनी में नहाना - चंद्रप्रकाश पडना ।

वाक्य - समुद्र का जल रात में चाँदनी मे नहा रहा था।

ii) सिर पर सवार होना -

उत्तर : सिर पर सवार होना - पीछे लग जाना ।

वाक्य - काम समय से पूरा करवाने के लिए मालिक मजदूरों के सिर पर सवार रहता था।

७) वाक्य में प्रयुक्त कारक पहचानकर उसका भेद

लिखिए :- १

i) राम ने रावण को तीर से मारा ।

उत्तर : राम ने - कर्ता कारक
रावण को - कर्म कारक
तीर से - करण कारक

ii) उन्हें आमंत्रित करने के लिए पत्र लिखा था ।

उत्तर : करने के लिए - संप्रदान कारक

८) वाक्य में यथास्थान विरामचिन्हों का प्रयोग कीजिए :- १

i) जी हाँ में कॉलेज में पढ़ी हूँ ।

उत्तर : जी हाँ में कॉलेज में पढी हूँ।

ii) दाँत भी थे पर नाखून के बाद ही उनका स्थान था ।

उत्तर : दाँत भी थे, पर नाखून के बाद ही उनका स्थान था।

९) सूचना के अनुसार काल परिवर्तन करके वाक्य फिर से लिखिए। (कोई दो) २

i) वे बहुत टिकते है । (पूर्ण भूतकाल)

उत्तर : वे बहुत टिके थे।

ii) खाना-पिना छूट गया (सामान्य भविष्यकाल)

उत्तर : खाना - पीना छूट जाएगा।

iii) वह मेज पर दूध रखती है । (पूर्ण भूतकाल)

उत्तर : उसने मेज पर दूध रखा था।

१०) i) निम्नलिखित वाक्य का रचना के अनुसार भेद लिखिए:- १

आजकल खूबसूरती का सवाल बेढब हो गया है ।

उत्तर : सरल वाक्य ।

ब) १) सूचना के अनुसार परिवर्तन कीजिए :- १

तुम्हें अपने शिक्षक की बात माननी चाहिए । (आज्ञार्थक वाक्य)

उत्तर : तुम अपने शिक्षक की बात मानो । (आज्ञार्थक वाक्य)

२) वाक्य शुद्ध करके फिर से लिखिए :- २

i) आवाज बहू के कान में पहुँचा ।

उत्तर : आवाज बहू के कानों में पहुँची।

ii) दोनों शिकारियों नीचे उतरा ।

उत्तर : दोनों शिकारी नीचे उतरे ।

विभाग ५ - उपयोजित लेखन : २६ अंक

प्र.५ (अ) पत्रलेखन - ५

निम्नलिखित जानकरी पर आधारित पत्रलेखन कीजिए :-

अमेय/अमेया त्रिवेदी, ९, मयूर कॉलोनी, नाशिक से अपने मित्र/सहेली समीर/समीरा पाटील ३/३७ आनंद नगर, संगमनेर को उसके जन्मदिन के कार्यक्रम में शामिल न होने का कारण बताते हुए पत्र लिखता/लिखती है।

उत्तर : दिनांक : ८-७ २०२२

प्रति,

समीर/समीरा पाटील,

समीर/समीरा पाटील

३/३७ आनंद नगर,

संगमनेर

प्रिय समीर/समीरा पाटील,

मुझे दु:ख है कि अति आवश्यक पारिवारिक कारों से मैं तुम्हारे जन्मदिवस पर उपस्थित नहीं हो पाया/पायी । आशा है, तूम मेरी मजबूरी समझोगे/ समझोगी अगले जन्मदिन पर मैं जरूर आऊँगा/ आऊँगी । अपने माता-पिता को मेरा चरण-स्पर्श कहना।

तुम्हारा/तुम्हारी अभिन्न मित्र/सहेली,

हस्ताक्षर

(अमेय/अमेया त्रिवेदी),

९,मयूर कॉलोनी, नाशिक ।

OR)

शिवाजी विद्यालय, रत्नागिरी, विद्यार्थी प्रतिनिधि के नाते 'स्वच्छ गाँव, सुन्दर गाँव' योजना के अन्तर्गत लेख प्रकाशित करने हेतू, संपादक 'जागृति' रत्नागिरी को पत्र लिखिए।

उत्तर : दिनांक ६ जून २०२२

सेवा मे,

संपादक महोदय,

जागृति, रत्नागिरी,

महाराष्ट्र

विषय - 'स्वच्छ गाव सुंदर गाँव' योजना के तहत लेख प्रकाशित करने के संबंध में ।

महोदय,

नम्र निवेदन है कि जिला परिषद, रत्नागिरी की तरफ से उपर्युक्त विषय पर आयोजित किये जाने वाले दिनांक ८ जून २०२२ के कार्यक्रम के संदर्भ से यदि आपके सम्मानित समाचार-पत्र में लेख छापा जाए तो पूरा रत्नागिरी क्षेत्र इससे बेहद लाभान्वित होगा।

आशा है आप इसे प्रमुखता से अपने समाचार पत्र

में स्थान देकर हम सभी को कृतज्ञ करेंगे।

आदर सहित उत्तर की प्रतीक्षा में।

भवदीय,

हस्ताक्षर

अमेय पाटील,

विद्यार्थी प्रतिनिधि,

शिवाजी विद्यालय रत्नागिरी ।

२) गद्य आकलन - ४

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर एक-एक वाक्य में उत्तरवाले चार ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर परिच्छेद में हों :-

शिक्षा मानव के विकास का .....
.....मूल्य प्राप्त नहीं कर पाता ।

उत्तर : १) शिक्षा किसका आधार है ?

२) शिक्षा विहीन व्यक्ति क्या करता है ?

३) शिक्षा माध्यम से व्यक्ति किस प्रकार का ज्ञान प्राप्त कर सकता है ?

४) शिक्षा प्राप्त करना कैसा अधिकार है ?

५) उपर्युक्त गद्य खंड के लिए एक उचित शीर्षक दीजिए।

(आ) १) वृत्तांत लेखन - ५

आपके क्षेत्र में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इसका वृत्तांत लिखिए । (वृत्तांत में स्थल, काल, घटना का उल्लेख करना अनिवार्य है ।)

उत्तर : २२ जनवरी २०२२ को विवेकानंद विद्यालय सोलापूर में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान का आयोजन किया था । सुबह नौ बजे विद्यालय के सभागृह में कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता हेतू उपस्थित महिमा कन्या विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती उषा शर्मा जी का जोरदार तालियों से स्वागत किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य राजपाल सिंह व अतिथि महोदया द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। उसके बाद विद्यार्थियों द्वारा माता सरस्वती की वंदना की गई।

प्रधानाचार्य ने अतिथि महोदय का संक्षिप्त परिचय दिया व एक पुस्तक भेंट में देकर उन्हें सम्मानित किया। उसके बाद अतिथि महोदया ने ५० प्रतिभाशाली व बुध्दिमान छात्राओं को छात्रवृत्ति देने की घोषणा की तथा सभी छात्राओंको संदेश दिया ।

कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने अतिथि महोदया और सभी छात्राओंका प्रित आभार प्रकट किया अत: दोपहर एक बजे इस कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समापन किया गया ।

अथवा

कहानी लेखन - ५

निम्नलिखित मुद्दो के आधार पर लगभग ७० ते ८० शब्दों में कहानी लिखिए और उचित शीर्षक दीजिए :-

एक शरारती लड़का - पढ़ाई की ओर ध्यान नहीं - माता - पिता, गुरुजनों का समझाना - कोई असर नहीं - परीक्षा में अनुत्तीर्ण - माता - पिता का फटकारना - घर छोड़ना - निराश होकर पहाड़ी मंदिर में पहुँचना - दीवार पर एक चींटी को दाना पकड़कर चढ़ते हुए देखना कई बार गिरकर चढ़ना, चढ़कर गिरना - हिम्मत न हारना - आखिर चढने में सफल - प्रेरणा पाना - उत्साह बढना - घर आकर पढाई में जुट जाना - आगे चलकर बडा विद्वान बनना - सीख

उत्तर : एक शरारती लड़का था । वह पढ़ाई की ओर ध्यान नहीं देता था। उसे माता-पिता और गुरूजनों के समझाने का भी कोई असर नहीं होता था। एक बार वह अपनी परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया । फिर माता पिता के फटकारने पर वह निराश होकर घर छोड़कर पहाड़ी मंदिर में पहुँचा। वहाँ पर उसने एक चींटी को दाना पकड़कर छढ़ते हुए देखा। कई बार गिरना चढ़ना ओर फिर सफल हो जाना । यह देखकर उसे प्रेरणा मिली ओर उसका ऊसाह बढ़ गया। वह वापस लौट आया और पढ़ाई में जुट गया। आगे चलकर वह बहुत विद्वान बना।

सीख: हमे हमेशा मेहनत करते रहना चाहिए। सफलता हमे जरूर मिलती है।

(२) विज्ञापन लेखन - ५

आदर्श विज्ञापन तैयार कीजिए ।

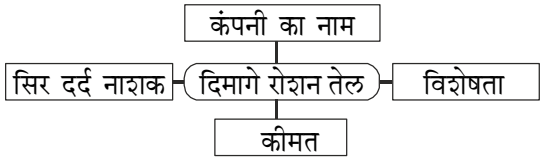

उत्तर :

(इ) निबंध लेखन - **७**

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर ८० से १०० शब्दों में निबंध लिखिए :

(१) 'हिंदी भाषा का महत्व'

उत्तर : संस्कृत को सरल करेन के लिए हिंदी का जन्म हुआ है। हिंदी के बाद भारत वर्ष में तमिल, तेलगु, कन्नड, गुजराती, उर्दू तथा कई अन्य भाषा अस्तित्व में आयी। संपूर्ण दुनिया पहले सिर्फ भारत थी आज सहस्त देशों में बट चुकी है। आज के आधुनिक संसार में देसा कोई देश नहीं जहाँ हिंदी न बोली जाती हो क्योंकि हर जगह का अस्तित्व भारत से हुआ है और हिंदी भारत की धरोहर है।

हिंदी शब्द का जनम संस्कृत भाषा के सिन्धु शब्द से हुआ है। सिन्धु एक नदी का नाम है जो की भारत वर्ष की प्रमुख और प्राचीन नदियों में से एक है। बाहरी महाद्वीप के लोग इस नदी को उदाहरण के रूप में 'जिस देशमें ये नदी है' वहां के लोगों को सिंधु न कह के हिंदू पुकारने लगे क्यों की उनके तलाफुज़ में से शब्द निकलना बहुत कठिन होता था, जिस वजह से स की जगह ह लगा कर सिंधु को हिंदू कहने लगे।

तब से भारत के लोगों केा हिंदू पुकारा जाने लगा, और आगे चल के पूरा देश हिंदूस्तान के नाम से जाना जाने लगा और उसी हिंदू से हिंदी शब्द आया और हिंदी भाषा का नाम करण हुआ । हिन्दू शब्द किसी भी शास्त्र, वेद, पुराण, उपनिषद में कहीं है, यह नाम हमे जबरदस्ती सौंपा गया है। आज के हिन्दू वास्तव मं सनातन तथा आर्य है और सभी नए धर्म के लोग भी पहले सनातन ही थे।

हमारे देश में हिंदी को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा मिला है परंतु उसको आधिकारिक काम में कोई अहमियत नहीं । आधिकारिक काम काजों में अंग्रेजी को ही महत्व दिया जाता है। आज के समय हिंदी भाषा सिर्फ नाम मात्र के लिए श्रेष्ठ है, इसका महत्व लोग भूलते जा रहे है। हम सभी हिंदी में ही वार्तालाप करते है ये एक बहुत ही अच्छी बात है।

ये सभी बातें हिंदी की महानता को दर्शाती है। तारीख १४ सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में बहुत धूम-धाम से हर जगह मनाया जाता है, क्योंकि इस दिन १९४९ में, भारत की संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में गणराज्य भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में लिखी हिंदी को आनाया था ।

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है। इसलिए हिंदी के महत्व को समझे और दुसरो को भी समझाएं।

(२) मनुष्य वही जो मनुष्य के लिए मरे (परोपकार)

उत्तर : राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त ने कहा था सच्चा मनुष्य वही है जो औरो के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर देता है। मनुष्य का सबसे बड़ा गुण है परोपकार। मनुष्य वही है जो वक्त आने पर दूसरो के काम आये, दूसरो का भला करे। एक सच्चा मनुष्य वही जो अपने स्वार्थ का त्याग करके औरो का भला करता है; अपने लिए तो केवल पशु पक्षी जीते है लेकिन मनुष्य सामाजिक प्राणी है। मनुष्य स्वयं कभी अकेला रह नही सकता है। उसे जीने के लिए परिवार, दोस्त और समाज की जरूरत होती है। इन्ही सब तथ्यों को प्रमाणित करते हुए कवि ने कहा है कि मनुष्य है वही कि जो मनुष्य के लिए मरे।

सच्चा मनुष्य वही है जो अपनों की कदर और परवाह करे और पूरी जिंदगी अपनों के लिए जितना हो सके करें। मनुष्य त्याग कर सकता है और वह जन कल्याण के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा सकता है। सच्चा मनुष्य वही है जो बलिदान के लिए तैयार रहता है।

मनुष्य जब अपने सुख दु:ख को औरो के साथ साझा करता है। वह सभी मनुष्यों को भवनात्मक तौर पर आपास में जोड़ देता है। जीवन में हमने अगर सभ्यता, साहित्य, कला अगर हरक्षेत्र में उन्नति की है तो उसका श्रेय किसी एक मनुष्य की वजह से नहीं हुआ है। इसके पीछे का कारण है मनुष्य हमेशा एक दूसरे के प्रति कुछ करना चाहते है। इसी सकारात्मक सक्रीय भावना की वजह से उन्नति हो पायी है।

मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए कई लोगों ने अपने जीवन तक की परवाह नहीं की। भगत सिंह,

राजगुरू और चंद्रशेखर आजाद जैसे लोगों को आज भी हम याद करते है। महात्मा गाँधी ने सत्य और अंहिसा का पत अपनाया और उन्हें देश ने राष्ट्रपिता माना। जिस ने भी मानवीय मूल्यों को अहमियत दी, इतिहास ने हमेशा उसे याद रखा। प्रत्येक मनुष्य को अपने स्वार्थ का त्याग कर, इंसानियत को ज्यादा महत्व देना चाहिए।

निष्कर्ष : ऐसे महापुरूषो को याद करने के साथ उन्हें इतना सम्मान दिया जाता है। वह मानता ेलिए ना केवल जीए बल्कि उनके लिए मरे भी । आज भ्रष्टाचार काफी बढ़ गया है जिसकी बजह से अपराध हो रहे है। इससे देश की उन्नति का विनाश हो रहा है। ऐसे लोगों की जरूरत है जो भ्रष्टाचार जैसे अपराधें को रोके और मनुष्यता के लिए जीए और मरे। हम सबको को मिलकर समाज और देश का विकास मानवता रूपी दीपक की रोशनी से करना होगा । सभी को उदार बनना चाहिए और जन कल्याण पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए। यही सही माईनों में सच्ची मानवता है।

(३) मेरा भारत महान

उत्तर : देश हमारा सबसे न्यारा, प्यारा हिंदुस्तान।

जाती अलग है, धर्म अलग है फिर भी एक है जान।

मेरा भारत देश एक सुंदर बगिया की भाँति है। इस बगिया में रंगबिरंगी फूलों की तरह अनेकों राज्य है। प्रत्येक राज्य की अपनी बोली, भाषा, वेशभूशा, त्योहार, रीति-रिवाज, परंपराएँ, खान-पान आदि हैं। प्रत्येक राज्य एक-दूसरे से अलग-अलग होने के बावजूद भी वहाँ में एकता की भावना है। मेरा देश एक लोकतांत्रिक देश है। जनसंख्या के मामले में मेरा देश विश्व में दूसरे स्थान पर है। मेरे देश में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, पारसी, बौध्द आदि धर्मो के लोग रहते हैं। इन विभिन्न धर्मों के त्योहार, जैसे- होली, दीवाली, ईद, नाताल, पारसी नवरोज, नवरात्रि आदि भी भिन्न-भिन्न हैं, लेकिन इन सभी त्योहारों को पूरे देशवासी मिल-जुलकर बड़े ही प्रेम से पूरे देश में मनाते हैं। मेरे देश की लोग दक्षिण का इडली-डोसा, महाराष्ट्र की पुरणपोली और मिसल-पाव, गुजरात का ढोकला, पंजाब का सरसों का साग, बंगाल के रसगुल्ले तथ उत्तर प्रदेश का पूरी साग बड़े चाव से खाते हैं।

मेरा देश उत्तर पर्वतों और नदियों से घिरा है तो दक्षिण में समुद्र तटों से पश्चिम की ओर रेगिस्तान है तो पूरब में बंगाल की खाड़ी है। हिमालय से निकलने वाली नदियाँ मेरे देश के चरण पखारती हैं। बड़े-बड़े पहाड़ों व घने वृक्षों से आच्छादित वनों से देश में चारों तरफ हमेशा हरियाली रहती है। मेरे भारत देश को प्रकृति ने अपने आँचल में जगह दी है, इसीलिए वह भारत देश पर सतत अपना स्नेह लुटाती रहती है। मेरा देश एक कृषिप्रधान देश है। मेरे देश का किसान फसल उगाने के लिए खेतों में जी तोड़ मेहनत करके खेतों में अनाज पैदा करता है और अपने देश के लोगों को पेट भरता है।

मेरे देश के बहादुर सैनिक दुश्मनों के दाँत खट्टे करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य कलाएँ पूरे देश में लोकप्रिय हैं, चाहे वह महाराष्ट्र की लावणी हो, पंजाब का भाँगड़ा या गुजरात का गरबा। पूरा भारत देश इन नृत्यों की तालों पर झूमता और थिरकता है। भले ही मेरे देश में कई राज्य हैं पर यहाँ सभी के लिए एक ही कानून है। किसी भी राष्ट्रीय आपदा के समय पूरा देश एकजुट होकर राहत कार्य में जुट जाता है। मेरे देश की विविधता में एकता के दर्शन होते हैं; मेरा देश प्राकृतिक संसाधनों से तृप्त है; मेरा भारत देश महान है।

****